आधुनिक संस्कृत-साहित्यकारों की अभिनव दृष्टि

सुमेर सिंह बैरवा

व्याख्याता संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर)

शोध सारांश

कविता हृदयस्य कापि भाषा मुखरा मौनमयी वधूर्नवैव ।
न हि शक्तिरथो न तत्र भक्तिः प्रतिप्रत्तिस्तु समर्पणाय मार्गः ।।
कविता हृदयस्य वाक्यशेषः कथिते ऽनुक्ततया प्रकाशमानः ।
कविता कविता कथा पुराणी न पुराणी न नवा, सुरांगना सा ।। [1]

संस्कृत साहित्य के विषय में जैसा कि सबको विदित है कि यह संसार का सर्वप्राचीन साहित्य है, यह आरोप प्रायः संस्कृतेतर भाषीय आलोचकों द्वारा लगाया जाता रहा है कि संस्कृत साहित्य में एक प्रकार की संकीर्णता विद्यमान है फिर चाहे यह संकीर्णता देश की हो, काल की हो या फिर वर्णित विषयों से संबन्धित ।

किन्तु अर्वाचीन संस्कृत साहित्य को देखें तो हमें अनुभव हो जाता है कि स्थिति ऐसी नहीं है। आज का संस्कृत साहित्यकार तमाम संकीर्णताओं से ऊपर उठकर " यत्र विश्वभवत्येकनीडं प्रभो की उक्ति को चरितार्थ कर रहा है। काव्य रचना के प्रत्येक स्तर पर संस्कृत कवि अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा है । अर्वाचीन संस्कृत साहित्य को यदि मात्रा की दृष्टि से परखा जाये तो यह सिद्ध हो जाता है कि गत दो शताब्दियों में जितनी प्रभूत मात्रा में संस्कृत में सृजन - कर्म हुआ है सम्भवतः उतना कभी नहीं हुआ । यही कारण है कि 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र ने इस युग को स्वर्णकाल कहा है । अर्वाचीन संस्कृत साहित्यकार ने न केवल अपनी रचनाओं की विषय वस्तु में व्यापक परिवर्तन किया है अपितु अन्य भाषीय साहित्य से प्रभावित होकर नवीन विधाओं को भी आत्मसात् कर रहा है। हम कह सकते हैं कि आज संस्कृत साहित्यकार नवीन तेवर के साथ सहृदय - पाठकों को रसासिक्त कर रहा है।

यहाँ अर्वाचीन संस्कृत साहित्यकारों की उन कतिपय विशेषताओं पर विचार करेंगे जिनसे इन साहित्यकारों की वैश्विक दृष्टि प्रमाणित हो जाती है।

मुख्य संकेत - सर्वप्राचीन साहित्य, पौराणिक चरित्र, अर्वाचीन संस्कृत, दूतकाव्य, महाकाव्य श्री रामकीर्ति महाकाव्य।

प्रस्तावना

प्राचीन साहित्य में प्रायः कवि अपनी रचनाओं का विषय या तो पौराणिक चरित्र के आधार पर निश्चित करते थे या फिर उसमें कोरी कल्पना होती थी. किन्तु अर्वाचीन संस्कृत कवि की रचनाओं की विषय-वस्तु में व्यापक परिवर्तन हुआ है। संस्कृत-कवि सीमित देश व काल के बाहर की घटनाओं व चरित्रों के आधार पर भी रचनाएँ लिख रहा है। इससे उसकी वैश्विक दृष्टि भी प्रकट हो जाती है । यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि विश्व के विभिन्न भागों में घटित घटनाओं का वर्णन करने हेतु उनको प्रत्यक्ष देखना अनिवार्य नही है क्योंकि आज के वैज्ञानिक युग में संचार के विभिन्न माध्यमों से कवि अनेक प्रकार की सूचनायें प्राप्त कर सकता है तथा उनके आधार पर काव्य की रचना भी कर सकता है। वस्तुतः प्रतिभाशाली कवि के लिये कुछ भी दुष्कर नही है काव्यमीमांसकार राजशेखर भी कहते हैं– **अप्रतिभस्य पदार्थसार्थः परोक्ष इव प्रतिभावतः पुनरपश्यतोऽपि प्रत्यक्ष इव । केचन महाकवयोऽपि देशद्वीपान्तर कथापुरूषादिदर्शनेन तत्रत्यां व्यवहृतिं निबध्नन्ति स्म ।** [2]

राजस्थान निवासी पं. मोहनलाल शर्मा पाण्डेय साहित्य के फलक पर ऐसे ही हस्ताक्षर है जो रूढियों को त्यागकर नवीनता के पक्षधर बने हैं । आपकी कृति "पत्रदूतम्" यूं तो विधा की दृष्टि से दूतकाव्य परम्परा का अनुसरण करती है, किन्तु इसका विषय सर्वथा नवीन है। बीसवीं सदी के उतरार्द्ध में खाड़ी युद्ध ऐसी घटना थी, जिसने सम्पूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था । इस युद्ध में एक तरफ थे ईराक के राष्ट्राध्यक्ष सद्दाम हुसैन और दूसरी तरफ थी विश्व की तथाकथित महाशक्तियाँ | 1990 में हुए इस युद्ध ने विश्व के सामान्य जन मानस पर व्यापक प्रभाव डाला था । यही कारण है कि कवि पाण्डेय ने भी विदेशी धरती पर हुए इस युद्ध से विचलित होकर " पत्रदूतम् " खण्डकाव्य की रचना की। इसमें कवि ने युद्ध के दौरान अमेरिका के एक वायु सेनाधिकारी द्वारा अपनी पत्नी को लिखे गये पत्र के व्याज से युद्ध की विभिषिकाओं का मार्मिक वर्णन किया है। सद्दाम के बर्बर सैनिकों द्वारा कुवैत में किये नरसंहार के मार्मिक चित्रण का उदाहरण दृष्टव्य है–

अत्याचारा असंख्या बहुविधभयदा घोरबाधाः कृतास्तै–
नसा ग्रीवाश्च भिन्ना युवनरवृषणाः स्फोटितास्तीक्ष्णशस्त्रैः ।
सद्यो जाता हि डिम्भा गदहरणपदे मारिता अंगभंग
स्त्रीणां भग्नं सतीत्व युवजनरूधिरं प्रोद्धृतं नालयन्त्रैः ।।[3]

रामशीष पाण्डेय (रांची) ने भी दूतकाव्य के माध्यम से अपनी वैश्विक दृष्टि का परिचय प्रस्तुत किया है । आपकी 'मयूखदूतम्' नाम रचना में नायक पौर्वात्य है तो नायिका पाश्चात्य । इसमें नायक मयूख को दूत बनाकर उसे भारत के पटना नगर से इंग्लैड भेजता है । यह मयूखदूत पटना से काशी, आगरा, दिल्ली होते हुए कराची, मक्केश्वर, यूनान, रोम, पेरिस व लंदन के रास्ते इंग्लैंड जाता है कवि ने इन स्थानों के भौगोलिक व प्राकृतिक दृश्यों का रसास्वादन पाठक को मन्दाक्रान्ता छन्द के माध्यम से करवाया है। प्रो. रामकरण शर्मा ने 'तैलावलिः प्लवमाना' कविता में खाड़ी युद्ध के दौरान समुद्र में फैले तेल के माध्यम से आज की बीभत्स राजनीति और मृतप्रायः मानवता का मार्मिक बोध इस प्रकार करवाया है– ऽ

नाहमस्मि जलदो जलधिर्वा
मानसं नहि सरोऽस्मि सरिद्वा ।
दानवव्यथितधातुमलाया

मातुरस्मि वमनावलिरूर्व्याः ।।
अद्य को ऽत्र सुलभः स महेशो
य पिबेन्मम विषायतिमुग्राम् । सर्वतोऽमृतवचांसि मुखाग्रे
बीजवन्ति च विषाणि करााग्रे ।। [4]

यहाँ कवि सत्यव्रत शास्त्री का महाकाव्य श्री रामकीर्ति महाकाव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसकी विशेषता यह है कि इसकी कथा का आधार भारत देश में प्रचलित कोई रामकथा न होकर थाईलैण्ड की रामकथा है कवि ने थाई देशों में प्रचलित रामकीर्ति नामक रामगाथा को इसका उपजीव्य बनाया है। इस महाकाव्य में ऐसे अनेक प्रसंग है जो भारतीय रामकथाओं में उपलब्ध नहीं होते, यथा विभीषण की पुत्री वेन्जकीय से हनुमान् का रमण व उससे असुरफद नामक पुत्र की उत्पत्ति । यह कथा सुखांन्तक है क्योंकि इसमें राम व सीता का मिलन हो जाता है। यह हर्ष का विषय है कि संस्कृत पाठक अब भारत के बाहर की रामकथा का भी रसास्वादन कर सकता

वैश्वीकरण के इस युग में पश्चिम के प्रभाव से संस्कृत कविता अस्तित्ववादी दर्शन व अतियथार्थवाद से भी सम्बद्ध हुई है। इस दृष्टि से केशवचन्द्र दाश एवं हर्षदेव माधव की रचनाएं पठनीय हैं। कवि दाश स्वयं को आषाढ की बूंद बतलाते हैं जो भूतल से मिलकर उसी में लीन हो जाना चाहती है–

नाहं निक्षिप्त कन्दुकः प्रत्यागमिष्यामि
भूतलं संस्पृश्य परमेको मिमिलिषुः आषाढस्य बिन्दुः [5]

कवि माधव अपनी कविता में आधुनिक प्रौद्योगिकी व यूरोप के जीवन या समाज से सन्दर्भ लेकर भी कवितायें रचते हैं। यथा–

अकलनन्दे! कुत्र त्वमसि ?
मम रेडियोतरंगदीर्घतायाः
प्रत्युत्तरो नास्ति
प्रेम्णो गणकयन्त्रे
किं ते मनोऽस्ति
एण्टी मैटर (अवस्तु) निर्मितम् ?[6]

वैज्ञानिक युग से प्रभावित होकर भी संस्कृत में काव्य रचे जा रहे हैं। 1966 में संगमनी पत्रिका (प्रयाग) में प्रकाशित "एकविंशति शताब्दी– द्वाविंशति शताब्दी ऐसा ही रूपक है, जिसमें भविष्य की नाना प्रकार की कल्पनाएं की गई हैं, यथा - 2060 में मनुष्य शुक्रग्रह पर विचरण करेगा, मनुष्य की परमायु 30 वर्ष होगी। यह रूपक हिंदी मूल का है, जिसके लेखक भगवान दास फड़िया हैं तथा इसका संस्कृतानुवाद प्रेमशंकर शास्त्री ने किया है। इस रूपक में स्थिति उस समय हास्यास्पद बन जाती है, जब एक पुरूष पात्र को ज्ञात होता है कि जिस सहयात्रिणी से वह प्रेम करने लगा था, वह तो प्लास्टिक की एक रॉबट मात्र है, स्त्री नहीं ।

शस्त्रीकरण की प्रतिस्पर्धा में रत विश्व के राजनेता जब निरस्त्रीकरण सम्मेलन का आयोजन करते हैं तो महाराजदीन पाण्डेय जैसे साहसी कवि इसे फूंस की झोपड़ी में बच्चों द्वारा आग उलीचने का खेल जैसा ही मानते हैं। आप इस नवीन सभ्यता को भस्मासुर के समान ही स्वीकारते हैं–

शस्त्रीनिर्माणे प्रतिस्पर्धा
निस्त्रीकरणसम्मेला
तृणकुटीके शिशूनामग्न्युपवनखेला
सभ्यता भस्मासुरीयति
मानयति मृत्यूत्सवम्
शिरसि कृत्वाण्वस्त्रपोट्टलिकाम्
स्खलन्ती रता नृत्ये
वदन्ती–
अयि मां लोकय ![7]

विभिन्न कार्यवश जब अर्वाचीन संस्कृत - कवि विदेशों का भ्रमण करके आता है तो वहां के प्राकृतिक दृश्यों, सभ्यता, संस्कृति आदि से प्रभावित होकर उन्हें अपने काव्य में उकेरने के लोभ का संवरण नहीं कर पाता। टी. व्ही. परमेश्वर अय्यर (केरल) ने **स्विसदेश प्रकृति-वर्णनम्" तथा "जर्मनीयात्रावर्णनम् दो वैदेशिक यात्रावृत्तपरक काव्य रचे हैं ।**

कविवर सत्यव्रत शास्त्री द्वारा 1975 में की गई जर्मनी यात्रा तथा 1977 में की गई थाईलैण्ड की यात्रा को क्रमशः **"शर्मण्य देशः सुतरां विभाति तथा "थाई देशविलासम्" बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम् तथा यवसाहित्यशतकम्** इन तीन लघु काव्यों की रचना करके बाली द्वीप के आंतरिक एवं बाह्य सौन्दर्य का वर्णन किया है । कवि प्रभाकर नारायण कवेठकर ने पेरिस के संग्रहालय में सज्जित विश्व विख्यात कलाकृति मोनालिसा का सौन्दर्य पान करके मोनालिसां तां मानसा स्मरामि नामक भाव पूर्ण कविता लिखी है, जिसका प्रकाशन दूर्वा (अंक 23) पत्रिका में हुआ है।

इधर अर्वाचीन संस्कृत कवियों में प्रमुख विदेशी चरित्रों को नायक बनाकर काव्य रचना की प्रवृत्ति भी बढ़ी है । हिन्दी के प्रख्यात कवि नागार्जुन ने अपने रचना काल के आरम्भिक दौर में रूस के क्रांतिकारी महान नेता लेनिन पर "लेनिनशतकम्" नामक काव्य संस्कृत में लिखा था। इसी चरित्र पर आधारित पद्म शास्त्री का 15 सर्गात्मक महाकाव्य 'लेनिनामृतम् " विशेष रूप से दर्शनीय है। सम्भवत: किसी विदेशी क्रांतिकारी को आधार बनाकर लिखा गया यह संस्कृत का प्रथम महाकाव्य है। इस महाकाव्य में प्राचीन संस्कृत कवियों की भांति लेनिन को अवतारी पुरूष के रूप में चित्रित न करके एक साधारण मनुष्य के रूप में दिखलाया गया है। पद्म शास्त्री ने इस महाकाव्य में बोल्शेविक क्रांति के जन्मदाता ब्लादिमीर लेनिन के चरित्र, जीवन, साम्यवादी दर्शन, रूस का भौगोलिक वर्णन एवं अंत में भारत-रूस की मैत्री की चर्चा की है । कवि ने रूस व भारत की मैत्री की बात वोल्गा (रूस की एक नदी) से गंगा के मिलन के रूप में प्रकट की है–

प्रसस्तु जनभूत्यै वोल्गाया सार्धमेषा |
निजविमलजलाद्या जाह्नवी जीवलोके ।।[8]

कवि रघुनाथ प्रसाद द्विवेदी ने मैक्सिम गोर्की पंचशती काव्य में विश्व के महान सर्वहारा लेखक मैक्सिम गोर्की के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला है । आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी ने अफ्रीका के स्वाधीनता सैनानी नेल्सन मण्डेला के कारागार से मुक्ति के प्रसंग को आधार बनाकर " शकटारकाव्यम्" लिखा है । आपने यूथिका नाटिका भी लिखी है, जो रोमियो जूलियट की प्रेम-कथा पर आधारित है ।

इनके अतिरिक्त डॉ. बनमाली बिश्वाल ने वेलेण्टाइन डे नामक पाश्चात्य - उत्सव पर आधारित प्रेम काव्य "वेलेण्टाइन डे संदेशः " की रचना कर सिद्ध किया है कि प्रणय की कोई सीमा नहीं होती । अप्पाशास्त्री राशिवडेकर ने "शाहोः कुमारावाप्तिः" एवं "उद्वाहमहोत्सवम्" काव्यों के माध्यम से अपने समय के अंग्रेज राजकुमार प्रिंस ऑफ वेल्स की प्रशासनिक एवं वैवाहिक घटनाओं को निबद्ध किया है। लक्ष्मीनारायण द्विवेदी (जयपुर) ने पुरूसिकंदरीयम् काव्य में अलेक्झेण्डर व पोरस से सम्बंधित घटनायें वर्णित की हैं । तिरूमल बुक्कपट्टन ने "आंग्लजर्मनी युद्ध विवरणम्" नामक महाकाव्य में इंग्लैण्ड व जर्मनी के मध्य हुए युद्ध का वर्णन किया है। जॉर्ज पंचम के निधन के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र एडवर्ड अष्टम् द्वारा प्रेम के कारण वंश परम्परा से प्राप्त साम्राज्य को की घटना से प्रभावित होकर ए. गोपालाचार्य ने 'युद्धवृद्धसोहार्दम्' नामक काव्य ठुकरा देने की रचना की। पशुपति झा (नेपाल निवासी) जहां अपने महाकाव्य नेपाल साम्राज्योदय में अपने देश नेपाल का वर्णन करते हैं, वहीं भारत के सम्बंध में वे अपनी आस्था भी प्रकट करते हैं। राजा श्यामकुमार टैगोर द्वारा जर्मनिकाव्यम् में जर्मनी देश का इतिहास वर्णित करना, अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा इण्डोनेशिया की भाषा में संस्कृत साहित्य का इतिहास वर्णित करना, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री द्वारा साहित्यवैभवम् में मोटरकार, रेलयान, जहाज, बिजली, छायाचित्र को विषय बनाना इत्यादि ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो अर्वाचीन संस्कृत कवि को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिला रहे हैं ।

विधाएँ :

जब से संस्कृत कवि का संस्कृतेतर भाषीय साहित्य से परिचय हुआ है, फिर चाहे वह साहित्य पौर्वात्य हो या पाश्चात्य, तब से अपने कथ्य को प्रस्तुत करने के लिये वह नवीन विधाओं रूपी कविता - कलेवर को भी अपनाने में हिचक नहीं रहा। गद्य साहित्य के अन्तर्गत लघुकथा व अतिलघुकथा (शॉर्ट– शॉर्ट स्टोरी) जासूसीकथा (डिटेक्टिव स्टोरी), उपन्यास, ललित निबन्ध, यात्रावृत, पत्रकारिता, विनोद - कणिकायें (चुटुकले) आदि विधाओं में सृजन - कर्म हो रहा है।

गद्य - साहित्य की इन विधाओं में ललित निबन्ध उल्लेखनीय है साथ ही उल्लेखनीय है इस विधा के प्रमुख रचनाकार यथा - हृषीकेश भट्टाचार्य, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, गणेशराम शर्मा, देवर्षि कलानाथ शास्त्री आदि। देवर्षि कलानाथ शास्त्री संस्कृत साहित्य में ललित निबन्ध के उद्भव व विकास के विषय में अपने विचार कुछ यूं प्रकट करते हैं– "व्यक्तिव्यंजक या ललित निबन्ध का उद्भव यूरोप में, विशेषकर फ्रांस में हुआ । यदि ललित निबन्धों के उदाहरण प्राचीन साहित्य में खोजे तो उन्हें भी अलंकृत शैली में लिखे गये स्तुतिपरक दण्डकों तक भी ले जाया जा सकता है, किन्तु वैसा साहित्य सही अर्थो में पाश्चात्य - साहित्य के सम्पर्क का परिणाम है, यह मानने में संकोच करना उपयुक्त प्रतीत नहीं होता । [10]

पद्य - साहित्य में भी कई नवीन विधाओं ने प्रवेश किया है। एक ओर जहां अभिराज राजेन्द्र मिश्र जैसे कवि कजरी, नकटा, सौहर आदि लोकगीतों से प्रभावित होकर संस्कृतगीत रच रहे हैं, वहीं उर्दू फारसी की गजलशैली पर आधारित गीतधारा एवं भावधारा भी सतत् प्रवाहमान है। कमलेश मिश्र (बिहार) ने कमलेशविलासः में तथा भटट् मथुरानाथशास्त्री ने अपने विविध काव्यों में कव्वाली, ठुमरी, लावणी के साथ गजलों का भी सुन्दर एवं शास्त्रीय प्रयोग किया है। गीतिवाणी (प्रकाशन 1927) में उर्दूभाषाचत्वर नामक खण्ड में भटट् जी की 58 गजल– गीतियों का संकलन है। आचार्य जगन्नाथ पाठक ने कापिशायनी, मृद्वीका, पिपासा रूपी सुराही से काव्यरसिकों को सुस्वादु चषकपान करवाया है। समीक्षक डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी पण्डित बच्चूलाल अवस्थी की गजल - गीतियाँ को शिल्प व भाव की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट मानते हैं। अवस्थी जी की गजल-गीति का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

पिका मौनं भजेरन् मासि वसन्ते कथंकारम् ।
शरः शाकुन्तलः सिद्ध्येन्न कथंकारम् ? ।।
भ्रुवोर्भगभ्रमाद् भूम्ना निषेधाः सम्प्रतीयेरन ।
कपोलप्रान्तसंकेता निगुहान्ते कथंकारम् ? ।।[11]

'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र ने भी कई लोकप्रिय गजलों की रचना की है और अपने आधुनिक काव्यशास्त्र 'अभिराजयशोभूषणम्' में संस्कृत - गजल के लिये 'गलज्जलिका' शब्द गढा है।[12]

"विमानकाव्यविधा" संस्कृत कविता में एक नवीन विधा है, जिसने सभी का ध्यान आकर्षित किया है। जब संस्कृत - कवि ने विमानयात्रा का सुखद अनुभव किया तो स्वतः ही उसकी लेखनी से संस्कृत कविता निःसृत होने लगी । इस अनुभव ने या तो खण्डकाव्य का रूप लिया या फिर वह मुक्तक रचना के रूप में प्रस्तुत हुआ । वेंकटराघवन् की कविता अभ्रमभ्रमभ्रविलायम् तथा प्रभाकरनारायण कवेठकर की भूलोकविलोकनम् मुक्तक रचनायें है । [13]

'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र ने विमानयात्राशतकम्" नामक खण्डकाव्य की रचना कर नई दिल्ली से बाली द्वीप की राजधानी डेनसपार तक की अपनी हवाई यात्रा का वर्णन किया है। इस काव्य में विमान की आंतरिक सज्जा तथा विमानगवाक्ष से दिखते प्राकृतिक दृश्यों का मनोहारी वर्णन प्राप्त होता है । अभिराज जी को विमान के नीचे स्थित बादल दूर्वास्थली में तृण चरते मेषशावक से प्रतीत होते हैं–

विमानाधस्तले कीर्णा असंख्या श्वेतवारिदाः। दूर्वास्थल्यामभासन्त चरन्तो मेषशावकाः । । [14]

किन्तु प्रो. रामकरण शर्मा की व्यथा यह है कि विमान में सैर करते हुए यात्री विमान के भीतर ही सब कुछ कर सकते हैं, बस गवाक्ष (खिड़की) नहीं खोल सकते–

पिबत खादत मोदत यात्रिण:
पठत जाग्रत माद्यत सीदत ।
लिखत पश्यत धूमयतापि च
न तु गवाक्षमपावृणुत स्वयं । । [15]

डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी ने भारत से पूर्वी जर्मनी तक की यात्रा के अनुभव **धरित्रीदर्शनलहरी** में उकेरे हैं, जो पाँच उन्मेषों में विभक्त हैं। आपके काव्य में पदे-पदे मेघदूत की छाया दृष्टिगत होती है। डॉ. त्रिपाठी ने व्योमबाला (एयरहोस्टेज) व यानाध्यक्ष (केप्टन) के स्वागतयुक्त वचनों को इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

आरूढश्च प्रमुदितमना: प्रेर्यमाणो विमानं
स्थानं नीत: क्लमविगमकं व्योमबालाप्रदिष्टम् ।
यानाध्यक्षो गमनसमयं चाथ संघोष्य यातृन्
प्रीत: प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार ।। [16]

संस्कृत नाट्य साहित्य में भी अनेक नवीन विधाएं विकसित हुई हैं यथा नुक्कड़ नाटक - स्ट्रीट प्ले (अभिराज राजेन्द्र मिश्र रचित चतुष्पथीयम् तथा डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी रचित प्रेक्षणकसप्तकम्) रेडियो नाटक (डॉ. रमाकान्त शुक्ल रचित नाट्यसप्तकम् तथा देवर्षि कलानाथ शास्त्री रचित नाट्यवल्लरी) संगीतिका या गीतिनाट्य - ऑपेरा (वनमाला भवालकर रचित रामवनगमनम् एवं पार्वतीपरमेश्वरीयम्), नृत्यनाटिका-बैले (नलिनी शुक्ला रचित पार्वतीतपश्चर्या व राधानुनय:), एंकाकी नाटक (अभिराज राजेन्द्र मिश्र, लीलाराव आदि नाटककार प्रमुख हैं ।)

छन्द :

छन्द की दृष्टि से 20वीं शताब्दी में बहुविध प्रयोग हुये हैं। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री इस दृष्टि से प्रमुख प्रयोगकर्ता कहे जा सकते हैं। आपने ब्रजभाषा के छन्दों में दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया, धनाक्षरी आदि के साथ-साथ उर्दू के काव्य से गजल में प्रयुक्त छन्दों में भी रचनाएं लिखी हैं इनके पश्चात् अनेक संस्कृत - कवियों ने इनका सफल प्रयोग किया है श्रीभाष्यम् विजयसारथि ने तेलुगू भाषा के छन्दों में भी संस्कृत कविताएं लिखी हैं।

देशी छन्दों के साथ विदेशी छन्दों का भी प्रयोग संस्कृत में किया जाने लगा है। डॉ. हर्षदेव माधव इस विषय में अग्रणी है । आपने दो जापानी छन्दों हाइकू व तांका का सुन्दर प्रयोग अपने कथ्य को प्रस्तुत करने के लिए किया है। हाइकू छन्द की विशेषता यह है कि इसके तीन पदों के कुल 17 वर्णों में कवि अपना अभिप्राय प्रस्तुत कर देता है–

यथा - रुग्णालयस्य
मक्षिका: कुशलिन्य:
स्वस्था मशका: [17]
|

तांका छन्द पंच पाद युक्त होता है, जिसमें 31 वर्ण होते हैं । कवि माधव दक्षिण कोरिया के साहित्य से ग्रहण किये गये सीजो छन्द में भी कविताएं रच रहे हैं। इस छन्द की तीन पंक्तियों में कुल 45 वर्ण होते हैं ।

वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य ने अंग्रेजी कविता के प्रसिद्ध छन्द सानेट का भी प्रयोग किया है । एक सानेट में कुल 14 पंक्तियां होती हैं तथा इनमें एक कविता भी पूर्ण हो जाती है। आपने सानेटों के लिये संस्कृत में संस्तबक शब्द प्रयुक्त किया है। आपके सानेटों (संस्तबकों) का उत्तम संग्रह कलापिका (कोलकत्ता, 1969) के नाम से प्रकाशित हुआ है ।

इधर पिछले कुछ दशकों से प्राचीन छन्दों के बन्ध तोड़ते हुए मुक्तछन्द में भी कविताएं लिखने की प्रवृत्ति बढी है, किन्तु कहीं-कहीं यह प्रयोग पद्य को गद्य के निकट ले आता है, यदि उसमें काव्य लय विद्यमान नहीं है तो । मुक्तछन्द की दृष्टि से केशवचन्द्र दाश उल्लेखनीय है । आप प्राय: मुक्तछन्द में ही कविताएं रचते हैं। यथा–

निधिभवनस्य / अलिन्दे यथा / श्रूयते भौतिकतास्वर: /
विक्षिप्तदीनतासु च / चीत्करोति / शैलकल्पक्षुधा / कमहं
श्रावयिष्यामि / प्रसूतिकाव्यथां मम?[18]

अनुवाद–

अर्वाचीन संस्कृत कवि न केवल मौलिक सृजन में व्यस्त है अपितु वह विदेशी भाषाओं की प्रमुख रचनाओं को संस्कृत में अनूदित भी कर रहा है। इसमें दो तरफा लाभ होता है। एक तो संस्कृत के पाठक को विदेशी भाषाओं के साहित्य का रसास्वादन हो जाता है तथा दूसरा इससे संस्कृत के भण्डारागार में भी श्रीवृद्धि होती है । यथा - राजराज वर्मा ने शेक्सपीयर के ऑथेलो नाटक का गद्य रूपान्तरण किया था । लक्ष्मण शास्त्री तैलंग (काशी) ने शेक्सपीयर के मर्चेंट ऑफ वेनिस तथा हेमलेट के काव्यात्मक सार वेतस्वती सार्थवाह: तथा हेमन्तकुमार: के नाम से किए। श्री शैल दीक्षित ने शेक्सपीयर के कॉमेडी ऑफ एरर्स का गद्यरूप में अनुवाद भ्रान्ति विलासम् के नाम से किया। श्री आर. कृष्णमाचार्य ने शेक्सपीयर के मिडसमर नाइट्स ड्रीम के आधार पर वासन्तिकस्वप्न की रचना की। डॉ. हरिहर वि. त्रिवेदी एवं लक्ष्मीनारायण ओ. जोशी द्वारा अनूदित अंग्रेजी कविताओं का संकलन 'आंग्लरोमांचम्' (चौखम्भा 1974) नाम से प्रकाशित हुआ है । कवि रामानन्दाचार्य ने शेक्सपीयर, ब्राउनिंग आदि की कतिपय प्रमुख कविताओं को लघुकाव्यमाला (मद्रास 1914) में प्रकाशित करवाया था ।

गोविन्दचन्द्रपाण्डेय ने भी 'अस्ताचलीयम्' संग्रह में अंग्रेजी कविताओं का अनुवाद किया है। यहां उल्लेखनीय है कि दूर्वा पत्रिका का एक सम्पूर्ण अंक 'विश्वकवितांक' के नाम से प्रकाशित हुआ था, जिसमें विश्व की विभिन्न भाषाओं के कवियों की कविताओं का संस्कृतानुवाद प्रस्तुत किया गया है।

झालरापाटन (राज.) निवासी गिरिधर शर्मा नवरत्न ने उमर खैयाम की रूबाईयों का संस्कृतानुवाद 'उमरसूक्तिसुधाकर' संग्रह में किया था, यह पृथिवी वृत्त में रचित है। अशोक अकलूजकर ने उर्दूकाव्यमधु के नाम से उर्दू कविताओं का अनुवाद किया जो शारदा पत्रिका (1966) में प्रकाशित हुआ । देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने भी 'कवितावल्लरी' में कतिपय गजलो का सुन्दर संस्कृतानुवाद किया है । कवि रामशास्त्री में सिन्दबाद की कहानियों को सिन्धुवादवृत्तम् में संस्कृतरूपान्तर करके प्रस्तुत किया। टी.व्ही. परमेश्वर अयर (केरल) ने स्विट्जरलेण्ड,जर्मनी,स्वीडन आदि देशों के राष्ट्रगीतों का संस्कृत में पद्यानुवाद किया है, ऐसा भी उल्लेख प्राप्त होता है।

इस प्रकार अर्वाचीन संस्कृत कवि रचना के प्रत्येक स्तर पर अपनी वैश्विक दृष्टि का परिचय दे रहा है । अब कवि पाण्डित्य प्रदर्शन के स्थान पर अपने कथ्य को प्रस्तुत करने में ध्यान देने लगा है। इसके लिये वह नवीन विधाओं को आत्मसात् करके बहुविध विषयों को प्रकट कर रहा है। व्याकरण - नियमों में भी शिथिलता आई है। देशी व विदेशी शब्दों का भी संस्कृतिकरण किया जा रहा है। या तो अन्य भाषीय शब्दों को ज्यों का त्यों ग्रहण किया जा रहा है या फिर नवीन शब्द आवश्यकतानुसार गढे जा रहे हैं। प्रतीक, बिम्ब, मिथक, फ्लेश बैक आदि का प्रयोग हो रहा है। हम कह सकते हैं कि अर्वाचीन संस्कृत कवि वैश्विक दृष्टि से अन्य किसी भाषा से बढकर नही है तो कम भी नहीं है। आनन्दवर्धनाचार्य की यह उक्ति इस सन्दर्भ में प्रासंगिक ही है–

वाचस्पतिसहस्त्राणां सहस्त्रैरपि यत्नतः।
निबद्धा सा क्षयं नैति प्रकृतिर्जगतामिव।। [19]

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. शतपत्र काव्य से उद्धृत (श्लोक क्रमांक - 7 व 95), रचयिता– आचार्यरेवाप्रसाद द्विवेदी
2. काव्यमीमांसा (चतुर्थ अध्याय से उद्धृत)
3. पत्रदूतम् (श्लोक क्रमांक - 39)
4. दीपिका से उद्धृत (पृष्ठ 151,152), शारदा प्रका० - दिल्ली (1992)
5. ईशा से उद्धृत (पृष्ठ - 1)
6. अलकनन्दा से उद्धृत (पृष्ठ - 18)
7. मौनवेधम् से उद्धृत (पृष्ठ - 34)
8. लेनिनामृतम् (15 / 74)
9. मद्रास से प्रकाशित (1937)
10. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास (सप्तम खण्ड) से उद्धृत (पृष्ठ - 499) प्रका0 उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ (2000)
11. वही (पृष्ठ 299 से उद्धृत)
12. अभिराजयशोभूषणम् (प्रकीर्णतत्वोन्मेष)
13. डॉ. रमाकान्त शुक्ल (वैमानिकम्), डॉ. हरिदत्त शर्मा (चल-चल विमानराज रे) कविताओं का भी उल्लेख मिलता है
14. विमानयात्राशतकम् (श्लोक क्रमांक-52)
15. वीणा से उद्धृत (पृष्ठ-77)
16. धरित्रीदर्शनलहरी (1 /6)
17. नखदर्पण से उद्धृत (पृष्ठ-99)
18. ईशा (पृष्ठ - 4)
19. ध्वन्यालोक (4 / 10)